एक अभियोग

कौन 1942 की विफलता का उत्तरदायी है?

एक अभियोग

कौन 1942 की विफलता का उत्तरदायी है ?

राम स्वरूप

अनुवादक: सौरभ अग्रवाल

वॉयस ऑफ इंडिया
नई दिल्ली

© वॉयस ऑफ इंडिया
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम हिन्दी संस्करण, 2025

ISBN 978-93-85485-44-2

Hindi translation of "An Indictment: Whose Responsibility for Failure of 1942"
एक अभियोग : कौन 1942 की विफलता का उत्तरदायी है?
लेखक: रामस्वरूप; अनुवादक: सौरभ अग्रवाल

प्रकाशक :
वॉयस ऑफ इंडिया
2/18, अन्सारी रोड,
नई दिल्ली - 110 002

Website: www.voiceofin.com

Published by Voice of India, 2/18, Ansari Road, New Delhi – 110 002.
Printed at D.K. Fine Arts Press Pvt. Ltd., Delhi – 110 052.

एक अभियोग
कौन 1942 की विफलता का उत्तरदायी है ?

हमें विफलता इसलिए प्राप्त नहीं हुई क्योंकि हम सामान्य भारतवासी इसमें विफल रहे वरन् इसलिए क्योंकि हमारे कांग्रेसी नेता इसमें विफल रहे!

संपादकीय

नायकों की पूजा, भारतीय-जीवन की एक सामान्य विशेषता है—और राजनीतिक परिदृश्य में हमें इसके उदाहरण अधिक मिलते हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि भारतवासी उन तथाकथित नायकों से सम्बंधित तथ्यों—गहनता और विस्तार दोनों आयामों में—से सवर्था अनभिज्ञ हैं, अत: वे अज्ञानतावश उन नायकों की पूजा करने में रत रहते हैं, जो वस्तुत: नायक हैं ही नहीं। '*चेंजर्स पब्लिकेशन*' की यह शृंखला इन तथाकथित नायकों से सम्बंधित दोनों पहलुओं की अपूर्णता एवं धुंध को दूर करने का प्रयास करेगी। शिक्षाप्रद पुस्तकों की यह शृंखला जानकारीपूर्ण और व्याख्यात्मक-विश्लेषणात्मक दोनों होने का प्रयास करेगी। यह शृंखला भारतीय राजनीति की प्रवृत्ति को अधिक तर्कसंगत और राष्ट्रीय आधार पर निर्देशित करने का भी प्रयास करेगी। पुस्तकों की शृंखला के इस 'पैम्फलेट क्रमांक 1' में वर्ष 1942 सीई के महान विद्रोह का राष्ट्रवादी मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है और इसकी विफलता के कारणों की शोध-जाँच करने का भी प्रयास किया गया है। यदि पुस्तक में तथ्यों अथवा उनके विश्लेषणों की प्रस्तुति अनावश्यक रूप से आपको कटु-कड़वी लगती है, तो हम केवल आपसे यह कहना चाहेंगे कि इस प्रकार की विफलताएँ वस्तुत: हमारे लिए वे विलासिता हैं, जिसका वहन करने का सामर्थ्य हम में व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से नहीं है। हमारे मध्य, भ्रम अथवा ग़लतफ़हमी न उत्पन्न हो,

अत: हम मुखरता के साथ एवं स्पष्ट रूप से आपसे यह कहना चाहते हैं कि हमारा तथाकथित भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से कोई लेना-देना नहीं है। हमारे यहाँ 'भारत की स्वतंत्रता की प्राप्ति ही सर्वोपरि ध्येय है और भारत की अक्षुण्ण स्वतंत्रता को यथावत बनाए रखना ही सर्वोपरि ध्येय है।' हमारे लिए 'भारत की स्वतंत्रता प्रथम है और भारत की स्वतंत्रता ही अंतिम' (सुभाष चन्द्र बोस)।

दया

सामान्य संपादक

एक अभियोग

मित्रों,

मैं आपके विचारार्थ एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण और नैतिक तथ्य आपके समक्ष रखना चाहता हूँ। संपूर्ण द्वितीय विश्व युद्ध, मानवीय विषयों से सम्बंधित सर्वाधिक वृहद् दुःखद त्रासदी, भारत को जरा-सा भी दुष्प्रभावित किए बिना समाप्त हो गया है। हमारी राजनीतिक स्थिति यथावत है, हमारे अधिपति-स्वामी वही हैं—और, निराली बात यह है कि हमारे नेता और नेतृत्वकर्ता भी वही पहले वाले हैं।

इस असामान्य रूप से स्थिर-अपरिवर्तित पृष्ठभूमि के विपरीत, हमारे समक्ष अन्य राष्ट्रों के राजनीतिक चित्र भी हैं, जिनका स्वरूप पूरा तथा सकारात्मक रूप से परिवर्तित हो गया है। द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात्, फ़्रांस और इंग्लैण्ड ने विजयी राष्ट्र घोषित होने के बावजूद, अपने घर में एक नए राजनीतिक दृष्टिकोण और वर्ग-विन्यास को अनुभव किया है और उसे स्वीकार भी किया है। यदि भारतवर्ष के समीप, मध्य पूर्व और सुदूर पूर्व में स्थित राष्ट्रों के लोगों की चर्चा करें, जिनकी समस्याएँ हमारी तरह ही हैं, तो हम पाते हैं कि वे एक नई राजनीतिक चेतना और इससे भी अधिक एक नए प्रयास-गतिविधियों और कार्यवाही करने के लिए जागृत हुए हैं।

इस तथ्य पर पुन: विचार करें। मात्र इस एक संपूर्ण द्वितीय विश्व युद्ध के घटनाक्रमों पर विचार करें, जिसने अन्य राष्ट्रों में जीवनशैली तथा जीवन के प्रति विचारों को परिवर्तित किया है और यह संपूर्ण द्वितीय विश्व युद्ध वस्तुत: परिवर्तन के लिए ही था, चाहे हम इसकी आकाँक्षा करते हों या नहीं। उसी समग्र प्रकृति के उसी युद्ध पर विचार करें, जिसने हमें वहीं छोड़ दिया है जहाँ हम थे। हमारे राष्ट्र में परिवर्तन क्यों नहीं हुआ है। यदि आप तथ्यों का विश्लेषण करेंगे तो आप इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए बाध्य होंगे कि कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ है।

यद्यपि क्या हमने अपने राष्ट्र को स्वतन्त्र कराने के विषय में कुछ भी सकारात्मक करने का प्रयत्न नहीं किया है ? क्या 1942 सीई में ही उपर्युक्त 'कहीं न कहीं ग़लत' को ठीक करने के लिए एक 'अंग्रेज़ों, भारत छोड़ों' आंदोलन प्रारंभ नहीं किया था ? हम अपने कर्मों-कार्यों के लिए ज़िम्मेदार हैं, यद्यपि उन कर्मों-कार्यों के फलों-परिणामों के लिए नहीं हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि कई बार हम अपने उन कर्मों-कार्यों को निर्धारित नहीं करते हैं। निस्संदेह हमने यथा-सामर्थ्य प्रयत्न किया है यद्यपि दुर्भाग्य से हम असफल रहे।

अब, मेरे मित्रों, मैं आपके विचारार्थ यह तथ्य प्रस्तुत करना चाहता हूँ कि हम असफल हुए हैं। यह एक अप्रिय तथ्य है। आइए हम तथ्यों का विश्लेषण करना सीखें, खासकर जब वे अप्रिय हों क्योंकि यह किसी भी फलदायक कार्य और परिणाम का प्रारंभ और आधार है। हम स्वाँग विश्वासों के आधार पर समृद्ध राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकते हैं।

यदि हम इस बात से सहमत हैं कि द्वितीय विश्व युद्ध बहुत-ही सार्वभौमिक और तीव्र चरित्र का युद्ध था। पर फिर भी हमारी दुखद स्थिति यथावत रही और उस विध्वंसक द्वितीय विश्व युद्ध से हमें कोई लाभ नहीं

हुआ। उस लाभ को प्राप्त करने की शक्तियाँ हममें सवर्था निहित थीं और यदि हम इस अप्रिय तथ्य को भी स्वीकार करते हैं कि हम उन शक्तियों का प्रयोग करने के पश्चात् भी असफल हुए हैं, तो हमें सहमत होना चाहिए कि सफलता प्राप्त करने की अत्यधिक सम्भावना थी। आइए यह जानने का प्रयास करते हैं कि हम असफल क्यों हुए और हम असफलता के कारण का निवारण कैसे कर सकते हैं।

2

अगस्त 1942 में भारतीयों ने अपने व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रयासों का एक विस्तृत परिचय दिया है। उन्होंने धैर्य और साहस प्रदर्शित किया है जो वस्तुत: प्रंशसनीय था। यद्यपि वे प्रयास व्यर्थ हुए थे क्योंकि वस्तुत: हमारे नेतागण अकुशल-अदूरदर्शी-नासमझ-अक्षम-उद्देश्यहीनों की एक भीड़ मात्र थी। मैं उनके विरुद्ध अभियोग-पत्र प्रस्तुत करने का अभिलाषी हूँ।

यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारंभ होने से पूर्व और उससे पहले जब इसके बादल यूरोप पर मंडरा रहे थे, तब हमारे कांग्रेसी नेताओं ने इसे एक तथ्य के रूप में स्वीकारने के स्थान पर इस तथ्य का पुर-जोर तरीके से तिरस्कार-खंडन करना प्रारंभ कर दिया। उनके लिए यह केवल एक नैतिक मुद्दा था। नतीजतन, उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के विषय में कुछ भी सार्थक करने या इसका लाभ उठाने के बजाय केवल इसका रोना रोया। उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अपने दायित्वों को परिभाषित करने और उन दायित्वों के निर्वहन के लिए सक्रिय रूप से तैयारी करने के बजाय द्वितीय विश्व युद्ध के प्रति अपने दृष्टिकोण को परिभाषित किया। उन्होंने भारत को स्वतन्त्र कराने से सम्बंधित समस्या पर सभी अप्रासंगिक कोणों से विचार किया। उन्होंने इस अनुकूल परिस्थिति के दौरान समस्या का समाधान अर्थात्

स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भावनात्मक तथा नैतिक रूप से प्रयास किया जबकि उन्हें बुद्धिमत्ता, अक्लमंदी तथा समझदारी से कार्य करना चाहिए था। उनके अंतरराष्ट्रीय संबंध, भावनाओं और सहानुभूति पर आधारित थे, नीति और साधन-उपक्रमों पर नहीं। जवाहरलाल नेहरू ने मुसोलिनी से इस आधार पर मिलने से इनकार कर दिया क्योंकि मुसोलिनी ने इथियोपिया पर कब्ज़ा कर लिया था तथा मुसोलिनी का यह कृत्य अलोकतांत्रिक था। यह जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व में निहित दोगलापन था या उसे अंग्रेज़ों द्वारा भारत पर अलोकतांत्रिक तरीके से कब्ज़ा करने से सम्बंधित तथ्यों के विषय में ज्ञान नहीं था। यद्यपि जवाहरलाल नेहरू का यह मूर्खतापूर्ण निर्णय उसको भारत की स्वतंत्रता की योजना बनाने या भविष्य में किसी भी समय भारत की लोकतांत्रिक भावनाओं को मूर्त रूप देने में उसकी सहभागिता को असक्षम-अकुशल प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि मूल रूप से भारतीय सैनिकों ने ही प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अपने प्राणों का उत्सर्ग करके अंग्रज़ी हुकूमत को यथावत-कायम रखा। यह भी एक ऐतिहासिक तथ्य है कि भारतीय सैनिकों को ऐसा करने के लिए तथा अंग्रेज़ी हुकूमत के प्रति हर स्थिति में वफ़ादार बने रहने के लिए भारत के मोहनदास करमचंद गांधी और जवाहर लाल नेहरू जैसे अग्रणी कांग्रसी नेताओं ने हर प्रकार से पुर-जोर तरीके से भारतीय सैनिकों को प्रेरित किया था। वस्तुतः जवाहर लाल नेहरू का यह कुकृत्य नितांत आपराधिक क़िस्म का था। हम यह क्यों नहीं देख पाते हैं या समझ पाते हैं कि हम अपने भारतीय सैनिकों के माध्यम से अपने परतंत्र मध्य पूर्व और सुदूर पूर्व के पड़ोसियों को अक्षुण्ण रूप से गुलाम बनाए रखने के लिए ज़िम्मेदार हैं? वस्तुनिष्ठ दृष्टि के अनुसार यह उन परतंत्र राष्ट्रों के लिए सर्वाधिक प्रशंस्य-स्तुत्य सेवा होगी यदि हम साम्राज्यवादी शक्तियों के प्रति अपनी तात्कालिक

और व्यक्तिपरक प्रतिक्रियाओं और सहानुभूतियों को संयमित कर उनकी स्वतंत्रता के विषय में कुछ सार्थक कार्य करते और उन राष्ट्रों के स्वतंत्रता आंदोलन को कुचलने के लिए अपने भारतीय सैनिकों के प्रयोग पर रोक लगाते।

भारतीय कांग्रेसी नेतृत्व ने द्वितीय विश्व युद्ध और उससे सम्बंधित आशंकाओं का सामना करते हुए, 'केवल' साम्राज्यवादी अंग्रज़ों के प्रति अपनी नैतिक आस्था और सहृदय व्यवहार को ही परिष्कृत किया था। उनकी अंतरराष्ट्रीय राजनीति की समझ अति-सीमित थी; जब इंग्लैंड या फ्रांस किसी अन्य राष्ट्र पर आक्रमण करते थे तो वे उनके विरुद्ध रोते थे और जब इंग्लैंड या फ़्रांस पर आक्रमण होता था तो वे इंग्लैंड या फ़्रांस के लिए रोते थे—हमारे भारतीय कांग्रेसी नेता भोले-भाले, प्यारे पर नितांत मूर्ख प्राणी थे।

3

यह नितांत आश्चर्य का ही विषय है कि जिस समय भारत के सपूत द्वितीय विश्व युद्ध में साम्राज्यवादी अंग्रज़ों की सत्ता एवं उनके सम्प्रभुत्व-आधिपत्य के क्षेत्रों की रक्षा करने में रत थे, उस समय हमारे कांग्रेसी नेता इन उदीयमान वैश्विक घटनाक्रमों के माध्यम से भारत एवं भारतवासियों के लिए लाभ को सुनिश्चित करने के उपक्रमों से सर्वथा विरक्त रहे। इन उदीयमान वैश्विक घटनाक्रमों का सदुपयोग करके भारत एवं भारतवासियों को वैचारिक रूप से, संगठनात्मक रूप से और तकनीकी रूप से सुदृढ़ किया जा सकता था। परन्तु कांग्रेसी नेताओं ने भारत एवं भारतवासियों के हित को सुनिश्चित करने के लिए कुछ भी यथार्थपूर्ण नहीं किया और यह कांग्रेसी नेताओं के द्वितीय विश्व युद्ध और उससे सम्बंधित अंतरराष्ट्रीय मुद्दों और निहितार्थों के प्रति उनके

दृष्टिकोण का स्वाभाविक परिणाम था। कांग्रेसी नेताओं के अनुसार यह कोई सुअवसर नहीं था, जिसका उपयोग करके राष्ट्रीय हित को साधा जा सके। वस्तुतः कांग्रेसी नेता अंग्रज़ों के प्रति अत्यधिक नैतिक निष्ठा और अप्रासंगिक विचारों के ज्वर से पीड़ित थे। 3 सितंबर 1939 के दिन जब ब्रिटेन ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की, तब वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने "भारत को दिए गए अपने संदेश" में भारत से विश्व के महान राष्ट्रों और ऐतिहासिक सभ्यताओं के मध्य अपना स्थान सुनिश्चित करने के लिए योग्य भूमिका निभाने का आग्रह किया। गांधी जी ने इस सुअवसर पर अपने वक्तव्यों के माध्यम से अपनी मूर्खता को प्रतिबिंबित किया था। गांधी जी ने भारत एवं भारतवासियों को समझाया और उनसे कहा कि इंग्लैंड के साथ इस समय सौदेबाज़ी करने की भावना भी अनैतिक है और यह भारत की उच्च परंपराओं के अनुरूप नहीं है क्योंकि इस समय इंग्लैंड 'जीवन और मृत्यु' के संघर्ष में उलझा हुआ है। गांधी जी ने भारत एवं भारतवासियों को समझाया कि इस विपत्ति काल में उन्हें अंग्रज़ों को बिना शर्त सहयोग-समर्थन देना चाहिए। भारतीय राजनीतिक और दार्शनिक परिदृश्य के सभी नेताओं ने आँख बंद करके गांधी जी का अनुसरण किया। गोविन्द बल्लभ पंत, डॉक्टर एस. राधाकृष्णन आदि ने भी भारतीय जनमानस के समक्ष भारत की ऐतिहासिक परंपराओं का हवाला देते हुए एवं इसी आधार पर गांधी जी के वक्तव्यों की पुनरुक्ति-पुनरावृत्ति की। जवाहरलाल नेहरू त्वरित ही चीन से वापस भारत लौटे और बर्मा (म्यांमार) की राजधानी रंगून में अंग्रेज़ों के प्रति अपनी अगाध आस्था को व्यक्त करने की जल्दबाज़ी में उसने गांधी जी के कथन के हर खंड को स्वीकार कर लिया—लोकतांत्रिक सहयोगियों के साथ सहयोग करने में नैतिकता निहित है, भारत की उच्च परंपराओं का पालन करने में

नैतिकता निहित है और विपत्ति में फँसे अंग्रज़ों को बिना शर्त सहयोग-समर्थन देने में नैतिकता निहित है—यद्यपि जवाहरलाल नेहरू ने इसमें एक और खंड जोड़ा था। जवाहरलाल नेहरू अंग्रज़ों से यह जानना चाहते थे कि लोकतंत्र के वे सिद्धांत, जिनके रक्षार्थ हेतु इंग्लैंड द्वितीय विश्व युद्ध में सम्मिलित हुआ था, वे भारत में कैसे लागू किए जाएँगे। अगले दिन से वे सभी एवं वही कांग्रेसी नेता उसी क्रम में तथा उसी नवीन संयोजन-परिवर्धन के साथ भारतवासियों को कर्कश राग-आलाप सुनाने में व्यस्त हो गए।

'कांग्रेस कार्य समिति' ने इस महत्त्वपूर्ण विषय पर रणनीति बनाने के लिए 8 सितंबर, 1939 के दिन एक 'ऐतिहासिक' बैठक को आहूत किया। 'कांग्रेस कार्य समिति' ने पाँच दिनों तक चली लंबी चर्चा और इस 'गंभीर संकट पर गंभीर विचार' करने के पश्चात् निर्णय लिया कि ''कांग्रेस की दृष्टि में फासीवाद और नाज़ीवाद में साम्राज्यवाद की उत्कट-प्रबलता सम्मिलित है।'' अंत में, कांग्रेस ने ''ब्रिटिश सरकार से कातर स्वर में आग्रह किया कि वह भारत के संबंध में अपने युद्ध के उद्देश्य को स्पष्ट शब्दों में घोषित करे।''

कांग्रेस नेतृत्व की आगे की कार्रवाई में उन्हीं ओजहीन नैतिक भावनाओं और कातर याचनाओं के दौर के अतिरिक्त कुछ नहीं था। यह साम्राज्यवाद की विधिवत निंदा प्रारंभ करने से पूर्व में फासीवाद की निंदा करने का दौर था। ए.आई.सी.सी. ने पुन: 9 और 10 अक्टूबर के दिन बैठक आहूत की और तत्पश्चात् उन्होंने निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया :

''हालाँकि 'कांग्रेस कार्य समिति' फासीवाद और नाज़ी आक्रामकता की पुर-जोर तरीके से निंदा करती है, पर 'कांग्रेस कार्य समिति' इस

कथन से पूरी तरह से आश्वस्त एवं सहमत है कि सभी औपनिवेशिक राष्ट्रों में लोकतंत्र के विस्तार से ही विश्व में 'शांति और स्वतंत्रता' को स्थापित एवं संरक्षित किया जा सकता है।''

भारत एवं भारतवासियों को स्वतन्त्र कराने के विषय में 'कांग्रेस कार्य समिति' के कुछ भी करने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई। कांग्रेस के नेताओं ने पुनः 19 नवंबर के दिन इलाहाबाद में बैठक की और तत्पश्चात् उन्होंने निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया :

'कांग्रेस ने द्वितीय विश्व युद्ध संकट और उसके परिणामस्वरूप उदित समस्याओं को अनिवार्य रूप से एक नैतिक विषय के रूप में चिह्नित किया है और कांग्रेस ने सौदेबाज़ी की भावना से इससे लाभ उठाने का कोई भी प्रयत्न नहीं किया है।''

कांग्रेस के नेताओं के लिए ''पाप से घृणा करो, पापी से नहीं'' आदर्श महावाक्य था। कांग्रेस के नेताओं ने ''पाप से घृणा करो, पापी से नहीं'' का अक्षरशः पालन किया। कांग्रेस के नेताओं के लिए यह नैतिक और तार्किक दोनों ही दृष्टि से सर्वोत्तम सत्य था। नैतिक दृष्टि के अनुसार हमें किसी से घृणा नहीं करनी चाहिए और न ही किसी को हानि पहुँचानी चाहिए। हालाँकि मैं यह समझ पाने में सर्वथा असमर्थ हूँ कि आप 'सत्य और नैतिकता की तलवार' का उपयोग करके किस प्रकार शत्रु-आक्रान्ता से अपने अधिकार तथा अपेक्षित सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। यह 'कांग्रेस कार्य समिति' के प्रस्तावों को मूर्खतापूर्ण एवं नितांत कुतर्क-संगत ही घोषित करता था। 'कांग्रेस कार्य समिति' के लिए ''भारत का अंग्रज़ों द्वारा शोषण'' तथा ''शोषक अंग्रेज़ समाज'' दो भिन्न-भिन्न स्वरूपों का प्रतिनिधित्व करते थे। हर बार कांग्रेसी नेता जब यह कहते थे कि वे ब्रिटिश साम्राज्यवाद से घृणा करते हैं, तब वे इसके साथ-साथ यह भी

अधिक मुखरता के साथ एवं ऊँचे स्वर में अभिव्यक्त करते थे कि वे ''अंग्रज़ों'' से अगाध प्रेम करते हैं। वस्तुत: कांग्रेसी नेताओं के इस कायरतापूर्ण आचरण के परिणामस्वरूप ही भारत को स्वतंत्रता विलम्ब से प्राप्त हुई थी। कांग्रेसी नेताओं का आचरण एवं दृष्टि हास्यास्पद ही कही जाएगी क्योंकि वे उस आक्रान्ता नृशंस शत्रु के प्रति अपने मन में हिलोरे मार रहे अगाध प्रेम को अभिव्यक्त कर रहे थे, जिनके विरुद्ध भारतवासी सामूहिक रूप से युद्धरत थे।

4

मैं एक तथ्य को मुखरता के साथ आपके समक्ष इंगित करना चाहूँगा, जो हमारी विफलता के लिए बहुत हद तक ज़िम्मेदार था तथा जो वस्तुत: हमारे कांग्रेसी नेताओं की नितांत मूर्खता एवं घृणास्पद करतूत से सम्बंधित था। कांग्रेसी नेताओं ने द्वितीय विश्व युद्ध के मुद्दे के प्रति अंतरराष्ट्रीय पूर्वाग्रह का समर्थन किया था। 'लोकतांत्रिक' पश्चिम (अर्थात् मित्र राष्ट्रों एवं उनके पक्षसमर्थकों) ने कांग्रेसी नेताओं के माध्यम से हमें बरगलाया कि द्वितीय विश्व युद्ध वस्तुत: लोकतांत्रिक शक्तियों एवं फासीवादी शक्तियों के मध्य अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक रक्तिम संघर्ष है। मॉस्को ने इसी वैचारिक सोच का समर्थन किया है। मार्क्सवादी विचारधारा के राष्ट्रवादी नेताओं ने भी इसी तर्क को अक्षरश: स्वीकार किया है। अत: भारतीय कम्युनिस्टों ने स्वयं को 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम' से पूरी तरह से पृथक कर लिया। वस्तुत: भारतीय कम्युनिस्टों ने 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम' का विरोध किया था। इन परिस्थितियों में 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम' की धार कुंद हो गई। कांग्रेसी एवं कम्युनिस्ट नेताओं के कारण 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम' पथभ्रष्ट हो गया और उसने अपना समस्त

प्रयोजन तथा अर्थ खो दिया — और, वस्तुतः वह राष्ट्रवादियों के लिए हानिकारक हो गया। ऐसे समय में जब विश्व, 'वैश्विक फासीवाद' (मुझे इसका वास्तविक अर्थ ज्ञात नहीं है) तथा अन्यान्य यूरोपीय साम्राज्यवादी शक्तियों के मध्य द्वितीय विश्व युद्ध का साक्षी बन रहा था, तब अन्यान्य यूरोपीय साम्राज्यवादी शक्तियों को भारत के कांग्रेसी एवं कम्युनिस्ट नेताओं द्वारा 'वैश्विक मनुष्यों' (मुझे इसका भी वास्तविक अर्थ ज्ञात नहीं है) के रूप में संदर्भित करना नितांत हास्यास्पद ही था। भारत के लिए चिंताजनक विषय यह था कि कांग्रेस ने भी बौद्धिक रूप से द्वितीय विश्व युद्ध की प्रपंचपूर्ण व्याख्या को अक्षरशः स्वीकार किया था। वस्तुतः विश्व की साम्राज्यवादी शक्तियाँ अपने आधिपत्य के क्षेत्रों में विस्तार के लिए अथवा अपने बलात् आधिपत्य के क्षेत्रों के रक्षार्थ हेतु द्वितीय विश्व युद्ध में खून की नदियाँ बहाने में संलग्न थीं। ऐसे में जवाहर लाल नेहरू ने गांधी जी के अदूरदर्शिता से परिपूर्ण कुतर्क में एक गौण प्रावधान को संयोजित करके और तत्पश्चात् अपने कुत्सित प्रयासों से भारत एवं भारतवासियों को और भी अधिक भ्रमित करने का प्रयास किया। कांग्रेस के नेताओं ने स्वीकार किया कि यह द्वितीय विश्व युद्ध वस्तुतः एक लोकतांत्रिक युद्ध था। कांग्रेस के नेताओं ने मान लिया कि साम्राज्यवादी ब्रिटेन, वस्तुतः लोकतंत्र की रक्षा हेतु द्वितीय विश्व युद्ध में रत हुआ है। कांग्रेस के नेता, साम्राज्यवादी ब्रिटेन के इन प्रपंचपूर्ण–कुतर्कों के प्रति पूर्ण रूप से आश्वस्त एवं निष्ठावान थे। कांग्रेस के नेता बस यह जानना चाहते थे कि लोकतंत्र के वे सिद्धांत, जिनके लिए ब्रिटेन द्वितीय विश्व युद्ध लड़ रहा था, वे भारत में कैसे लागू किए जाएँगे।

परन्तु कांग्रेस के नेताओं का यह प्रश्न महत्त्वहीन था। वस्तुतः हमने अपने शत्रु अंग्रेज़ों के प्रपंचपूर्ण कुतर्कों की नैतिक वैधता को स्वीकार कर लिया था। यह ब्रिटेन के हाथों हमें हमारे कांग्रेस के नेताओं की

अदूरदर्शिता–अक्षमता एवं मूढ़ता के कारण मिली सबसे बड़ी वैचारिक हार थी। आज वामपंथ पूरे विश्व में एक शक्ति क्यों है ? ऐसा इसलिए है क्योंकि वामपंथ–साम्यवाद ने सर्वप्रथम बौद्धिक स्तर पर, अपने विरोधी दार्शनिकों की यथास्थिति और प्रतिक्रिया के विरुद्ध वैचारिक युद्ध में विजय प्राप्त की थी। दूसरी ओर, हमने अपने शत्रु साम्राज्यवादी अंग्रेज़ों के साथ वैचारिक युद्ध में आत्म–समर्पण करने के साथ उनके प्रपंचपूर्ण बौद्धिक विश्लेषण को स्वीकार किया था और इसके परिणामस्वरूप, हमने उनके भारत पर बलात् आधिपत्य की वैचारिक वैधता को भी स्वीकार कर लिया था। भारत एवं भारतवासियों के व्यवहार में अकुशलता, असक्षमता एवं भ्रम की स्थिति वस्तुतः कांग्रेस के नेताओं के द्वारा लिए गए ऐसे अदूरदर्शी एवं मूढ़तापूर्ण निर्णयों एवं कदमों के ही स्वाभाविक परिणाम थे।

द्वितीय विश्व युद्ध के प्रति शत्रु साम्राज्यवादी अंग्रज़ों के इस तरह के प्रपंचपूर्ण दृष्टिकोण को स्वीकार करने के पश्चात्, कांग्रेस के नेताओं के लिए भारतीय स्वतंत्रता से सम्बंधित प्रश्न का महत्त्व दोयम दर्जे का हो गया। कांग्रेस के नेताओं के लिए शत्रु साम्राज्यवादी अंग्रज़ों की मातृभूमि में लोकतंत्र की रक्षा का प्रश्न तत्काल महत्त्व का हो गया तथा भारतीय स्वतंत्रता से सम्बंधित प्रश्न भविष्य में हल करने के लिए छोड़ दिया गया। कांग्रेस के नेताओं के लिए शत्रु साम्राज्यवादी अंग्रेज़ों के स्थापित आधिपत्य के क्षेत्रों की रक्षा का प्रश्न मुख्य हो गया तथा भारतीय स्वतंत्रता का प्रश्न गौण हो गया। यह भारत एवं राष्ट्रवादी भारतवासियों के लिए नितांत चिंता का विषय था।

कांग्रेस के नेताओं के द्वारा विश्व युद्ध और उससे सम्बंधित मुद्दों का ऐसा अदूदर्शी–मूर्खतापूर्ण विश्लेषण, भारत एवं भारतवासियों के लिए अत्यधिक हानिकारक प्रमाणित हुआ था। कांग्रेस के नेताओं ने विशेष रूप

से राष्ट्रीय महत्त्व के प्रश्न को तथा सामान्य रूप से औपनिवेशिक प्रश्न को वस्तुत: भारत एवं भारतवासियों के हित की दृष्टि से, एक वस्तुनिष्ठ और लाभप्रद परिप्रेक्ष्य से च्युत कर दिया।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस प्रपंच-उपद्रव एवं भ्रम की स्थिति को उत्पन्न करने के लिए सामान्य तौर पर कांग्रेस नेतृत्व तथा विशेषकर जवाहरलाल नेहरू ज़िम्मेदार था, पर कांग्रेस के नेताओं ने छल और प्रपंच रचकर इसका सम्पूर्ण दोष राष्ट्रवादी भारतीयों पर मढ़ दिया। ''हम साम्राज्यवाद से घृणा करते हैं यद्यपि हम फासीवाद से अधिक घृणा करते हैं,'' कांग्रेस के नेताओं के लिए उस समय का चिर राग-आलाप था एवं चर्चा का सामान्य विषय था। कांग्रेस के नेताओं के द्वारा भारत एवं भारतवासियों को भ्रमित करने के उद्देश्य से तथा शत्रु साम्राज्यवादी अंग्रेज़ों के हित को साधने के लिए रचा गया यह छल-प्रपंच से परिपूर्ण उद्घोष न केवल तथ्य की दृष्टि से असत्य था वरन् भारत एवं भारतवासियों के लिए भी घातक सिद्ध हुआ था। कांग्रेस के नेताओं के द्वारा यह चिर राग-आलाप सुनने में, पढ़ने में तथा विश्लेषण में भी असत्य एवं छल-प्रपंच से युक्त था।

5

इस सत्य से अभिप्रेरित विचार-विमर्श एवं चर्चा के सत्र को आगे बढ़ाने से पहले, आइए हम अपने मस्तिष्क एवं हृदय को सत्य के कड़वे घूँट को पीने के लिए उद्यत कर लें। हमने देखा है कि कांग्रेस के नेताओं के मन एवं क्रियाकलापों में भारत एवं भारतवासियों के हितों के प्रति कितनी घोर अकर्मण्यता एवं उदासीनता विद्यमान थी तथा वे शत्रु साम्राज्यवादी अंग्रेज़ों

के हितों को साधने के प्रति कितने तत्पर एवं सजग थे। क्या कांग्रेस के नेताओं को इस बात का कोई अंदाजा नहीं था या वे इस बात को लेकर भ्रम में थे कि वे भारत को स्वाधीनता दिलाने के लिए या शत्रु साम्राज्यवादी अंग्रेज़ों के हितों को साधने के लक्ष्य को लेकर कटिबद्ध हुए थे? कांग्रेस के नेता, अंग्रज़ों तथा भारतवासियों के समक्ष अपनी उत्तम से उत्तम छवि के निर्माण में संलग्न थे। कांग्रेस के अधिकांशतः शीर्ष नेतृत्व के लिए भारतीय स्वतंत्रता से सम्बंधित प्रश्न गौण था तथा उनके लिए उनकी व्यक्तिगत स्वार्थसिद्धि से सम्बंधित प्रश्न मुख्य था। वस्तुतः वे भारतीय स्वतंत्रता से सम्बंधित प्रश्न का उपयोग करके अपनी सत्ता-लोलुपता के स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए कटिबद्ध हुए थे। इससे भी दुखद एवं कष्टप्रद बात यह थी कि कांग्रेस के नेताओं के पास भारत को स्वतंत्र कराने के लिए यथार्थपूर्ण कार्य-योजना का अभाव था तथा उन्हें इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं था कि भारत को स्वतंत्र कराने के लक्ष्य तक कैसे पहुँचा जाए। कांग्रेस के कुछ नेता अहिंसा जैसे नैतिक सिद्धांतों को भारतीय जन के मानस में रोपित करने के लिए लड़ रहे थे; कांग्रेस के कुछ अन्य नेता भारतीय जन के मानस में अंतरराष्ट्रीयतावाद, जिसे आकर्षक-प्रलोभक यद्यपि निरर्थक-प्रभावशून्य रूप में 'मानवता' कहा जाता है, की भावना को रोपित करने के लिए लड़ रहे थे। इसे हास्यास्पद ही कहा जाएगा कि कांग्रेस नेतृत्व के लिए अंतरराष्ट्रीयतावाद का वृहद् अर्थ "ब्रिटिश मानवता" से प्रारंभ होकर "ब्रिटिश मानवता" पर ही समाप्त हो जाता था। यह संक्षेप में कांग्रेस नेतृत्व में निहित अकल्पनीयता, अकर्मण्यता, अक्षमता तथा मानसिक दिवालियापन को ही दर्शा रहा था। कांग्रेस नेतृत्व के अदूरदर्शी-मूढ़तापूर्ण आचरण के विपरीत अन्य लोग

अपने प्राकृतिक, अविभाज्य जन्मसिद्ध अधिकार अर्थात् स्वतंत्रता के अधिकार को पुष्ट करना चाहते थे—जिसे आमतौर पर अमेरिका के साथ चिह्नित एवं संयोजित किया जाता था।

हालाँकि सत्य यह है कि कांग्रेस के नेता या तो नैतिक आधार पर उद्यत हुए थे या राजनीतिक फैशन का पालन करने के लिए। परन्तु दुखद यह था कि कांग्रेस के नेताओं में से कोई भी 40 करोड़ मानवों के प्राकृतिक, अविभाज्य जन्मसिद्ध अधिकार अर्थात् भारतीयों की स्वतंत्रता के लिए उद्यत नहीं हुआ था। संभवतः कांग्रेस के नेताओं की दृष्टि में पराधीन भारतीय समाज 'लोकतांत्रिक मानवता' का अभिन्न अंग नहीं था। इसे हास्यास्पद ही कहा जाएगा कि कांग्रेस के नेता उसी पराधीन भारतीय समाज का नेतृत्व करने का दावा कर रहे थे। इसे हास्यास्पद एवं छल-प्रपंच ही कहा जाएगा कि कांग्रेस के नेता उसी पराधीन भारतीय समाज को शत्रु साम्राज्यवादी अंग्रज़ों से स्वतंत्रता दिलवाने का दिवास्वप्न दिखाकर पराधीन आम भारतीयों का विश्वास छल से प्राप्त कर एवं भोले-भले भारतीयों का नेतृत्व करने की बात कर अंग्रेज़ों के साथ मिलकर अपने व्यक्तिगत हित साध रहे थे। कांग्रेस के नेता वस्तुतः शत्रु साम्राज्यवादी अंग्रेज़ों के प्रति पूर्ण रूप से आस्थावान एवं निष्ठावान बने रहे। कांग्रेस के नेताओं द्वारा भारत एवं भारतवासियों से किए गए इस छल-कपट के कारण आम-भारतीय वस्तुतः अनाथ हो गए थे।

6

कांग्रेस के नेताओं के द्वारा ऐसे आपराधिक मानसिक भ्रम और अप्रासंगिक निष्ठाओं के प्रदर्शन के परिणामस्वरूप आम भारतीय जनमानस दिग्भ्रमित हुआ था। आख़िरकार, गांधी जी के आग्रह-आदेश

पर, कांग्रेस के अन्य नेताओं ने 27 अप्रैल के दिन इलाहाबाद में बैठक को आयोजित कर के गांधी जी के द्वारा सुझाई गई रणनीति पर आम–चर्चा करने के लिए सहमति प्रदान की। कांग्रेस के नेताओं ने इस आम–चर्चा के पश्चात् एक प्रस्ताव का मसौदा तैयार किया। कांग्रेस के नेताओं के द्वारा इस प्रस्ताव के मसौदे के माध्यम से पुनः ब्रिटिश सरकार से सविनय करबद्ध आग्रह किया गया कि वे लोकतंत्र के उन सिद्धांतों, जिनके रक्षार्थ हेतु इंग्लैंड द्वितीय विश्व युद्ध में सम्मिलित हुआ था, के विषय में स्पष्ट करें कि वे भारत में कैसे लागू किए जाएँगें, परन्तु इस बार, कांग्रेस के नेताओं ने, अपने पूर्व के क्रियाकलापों से इतर, प्रस्ताव के मसौदे में सविनय करबद्ध आग्रह को अति–सीमित मुखरता प्रदान की थी। कांग्रेस के नेताओं द्वारा बारम्बार आहूत की जा रही आम–चर्चा के सत्रों में भारत की स्वतंत्रता के विषय में पूरी तरह से उदासीनता बरती गई थी, वस्तुतः यही कांग्रेस नेतृत्व की छल–प्रपंच से ओत–प्रोत विशेषता रही है। कांग्रेस के नेताओं का मानना था कि उनके द्वारा आम–चर्चा करने के पश्चात् लिखित में अंग्रज़ों से आग्रह करने से उनके द्वारा भारत के आम जनमानस के प्रति उनके दायित्वों के निर्वहन की इतिश्री हो जाएगी। कांग्रेस के नेताओं को लगता था कि लिखित में अंग्रेज़ों से माँग करने पर, भारत के शत्रु तथा नृशंस साम्राज्यवादी अंग्रेज़ उनके कातर आग्रह को अक्षरशः मान लेंगे। कांग्रेस के नेता इस पूरी आम–चर्चा में इसी भ्रम से ग्रसित रहे थे, इस बात के बहुधा प्रमाण हैं। कांग्रेस के नेताओं ने कभी भी इस विषय में स्पष्ट रूप से नहीं सोचा कि यदि भारत के शत्रु तथा नृशंस साम्राज्यवादी अंग्रेज़ उनके अति–सीमित मुखरता के साथ किए गए कातर आग्रह को अस्वीकार करते हैं, तो उस स्थिति में उन्हें क्या प्रभावी कदम उठाना होगा। कांग्रेस के नेताओं का मानना था कि भारत के शत्रु तथा

नृशंस साम्राज्यवादी अंग्रेज़ उनके इस बार मुखरता के साथ किए गए कातर आग्रह को अस्वीकार नहीं करेंगे क्योंकि उनके इस बार मुखरता के साथ किए गए कातर आग्रह को भारत के शत्रु तथा साम्राज्यवादी अंग्रेज़ों द्वारा अस्वीकार करना न केवल अनुचित होगा वरन् अंग्रेज़ों के लिए हानिकारक भी होगा। इस आम-चर्चा के पश्चात् हमारी भारत की राजनीति के सर्वाधिक निम्नतम व्यक्तित्व जवाहरलाल नेहरू प्रमाणित हुए, जवाहरलाल नेहरू ने कहा, ''कांग्रेस पिछले ढाई वर्षों से जिस नीति का अनुपालन कर रही है, अर्थात् कांग्रेस जो बिना किसी अपेक्षा अथवा पूर्व शर्त के अंग्रेज़ों को सहयोग-समर्थन दे रही थी, यह दृष्टिकोण उसके ठीक विपरीत है। इससे मित्र राष्ट्रों को यह सन्देश जाएगा कि हम (भारत एवं भारतवासी) उनके शत्रु हैं।'' अत: ''मित्र राष्ट्रों के विषय में हम (भारत एवं भारतवासियों) ने जो रवैया अपनाया है, यह दृष्टिकोण उससे सर्वथा भिन्न है। कम से कम मैंने, स्वयं को मित्र राष्ट्रों के प्रति 100% सहानुभूति रखने के लिए प्रतिबद्ध किया है। मेरे लिए इस प्रतिबद्धता के विपरीत जाकर आचरण करना अपमानजनक होगा।''

वस्तुत: जवाहरलाल नेहरू ने कांग्रेस के इस प्रस्ताव के मसौदे का पुर-जोर विरोध किया। जवाहरलाल नेहरू, कांग्रेस के नेताओं को तथा भारत एवं भारतवासियों को यह समझाने में व्यस्त थे कि उन्हें नैतिकता का पालन करते हुए बिना किसी अपेक्षा अथवा पूर्व शर्त के अंग्रज़ों को सहयोग-समर्थन देते रहना चाहिए। स्पष्ट है कि जवाहरलाल नेहरू, अंग्रज़ों को शाश्वत रूप से सहयोग-समर्थन देने के पक्ष में थे। संभवत: जवाहरलाल नेहरू का यह मानना था कि अंग्रेज़ ''यथोचित रूप से ऐसा (अर्थात् भारत का त्याग) नहीं कर सकते हैं। संभवत: जवाहरलाल नेहरू की यह इच्छा थी कि अंग्रेज़, भारत एवं भारतवासियों को स्वतंत्रता दें पर

वे भारत में रहकर भारत एवं भारतवासियों को सदैव अपनी छत्रछाया में रखें। जवाहरलाल नेहरू यह सोच कर ही काँपने लगते थे कि यदि अंग्रेज़ों ने भारत एवं भारतवासियों को स्वतंत्रता देने के साथ ही भारत से प्रयाण कर लिया तो भारत एवं भारतवासियों का क्या होगा। जवाहरलाल नेहरू ने कांग्रेस के नेताओं को तथा भारत एवं भारतवासियों को यह प्रपंच समझाने का प्रयास किया कि यदि अंग्रेज़ों ने भारत एवं भारतवासियों को स्वतंत्रता देने के साथ ही भारत से प्रयाण किया तो इससे ''सैनिक एवं नागरिक प्रशासन का पूरा तंत्र ढह जाएगा'' तथा यह स्थिति भारत के लिए सर्वथा सुखद नहीं होगी।

मौलाना आज़ाद ने भी इसी 'समस्या' को कम स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया। मौलाना आज़ाद ने भी अंग्रेज़ों के द्वारा भारत एवं भारतवासियों को स्वतंत्रता देने के साथ ही भारत से प्रयाण करने के निर्णय को भारत एवं भारतवासियों के हितों के विपरीत संदर्भित किया तथा अंग्रेज़ों से ऐसा कदन नहीं उठाने का आग्रह किया। मौलाना आज़ाद ने कहा, ''हमारी स्थिति क्या है? क्या उसे ब्रिटिश सरकार से यह कहना चाहिए कि वे भारत से चलें जाएँ और जापानियों और जर्मनों को भारत पर आक्रमण कर के एकाधिकार स्थापित करने की अनुमति देनी चाहिए या हमें यह प्रयास करने चाहिए कि ब्रिटिश सरकार भारत में रुके और जापानियों और जर्मनों के आक्रमण को रोके?''

इस चर्चा से दो बातें स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आती हैं।

1. कांग्रेस के नेता भारत को स्वतंत्र कराने की राष्ट्रीय तात्कालिकता और भारत की स्वतंत्रता की माँग की वैधता के विषय में चिंता नहीं कर रहे थे। वरन् कांग्रेस के नेता उस समय भारत की स्वतंत्रता की निरंतरता को कैसे यथावत बनाए रखेंगे इस बात पर

चर्चा कर रहे थे। कांग्रेस के नेता उस समय जर्मनों का आक्रमण सह रहे अंग्रज़ों से भारत की स्वतंत्रता की माँग से सम्बंधित नैतिकता पर चर्चा कर रहे थे। कांग्रेस के नेता उस समय कांग्रेस के नेताओं द्वारा भारत की स्वतंत्रता की माँग करने के कारण 'मित्र राष्ट्र एवं उनके सहयोगी क्या महसूस करेंगे' के विषय में चिंता कर रहे थे।

2. कांग्रेस के नेताओं ने इस बात पर किंचित मात्र भी विचार नहीं किया कि भारत की स्वतंत्रता की माँग को किस प्रकार तथा सर्वोत्तम ढंग से क्रियान्वित किया जाए। कांग्रेस के नेताओं ने इस बात पर भी विचार करने से परहेज़ किया कि भारत की स्वतंत्रता की माँग को कैसे प्रभावी बनाया जाए। कांग्रेस के नेताओं ने इस बात पर भी विचार करने से परहेज़ किया कि भारत की स्वतंत्रता के ध्येय को कैसे यथाशीघ्र प्राप्त किया जाए। दूसरी ओर, कांग्रेस के नेताओं ने मान लिया था कि यदि अंग्रेज़ों ने भारत की स्वतंत्रता की माँग स्वत: ही मान ली तो क्या होगा। वस्तुत: कांग्रेस के नेता अंग्रेज़ों द्वारा भारत को स्वतंत्र करने की संभावना से ही भयभीत हो रहे थे। कांग्रेस के नेताओं ने यह कभी भी नहीं सोचा था कि भारत की स्वतंत्रता की माँग के लिए उन्हें द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् अंग्रेज़ों से लड़ना होगा। कांग्रेस के नेताओं को लग रहा था कि अंग्रेज़ द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् स्वत: ही भारत को स्वतंत्र घोषित कर देंगे। कांग्रेस के नेताओं का यह सहज रवैया बताता है कि वे इस '*वैक्यूम*' से क्यों डरते थे, जो अंग्रेज़ों के भारत एवं भारतवासियों को स्वतंत्रता देने के साथ ही भारत से

प्रयाण करने के पश्चात् भारत के सैनिक प्रशासन के क्षेत्र में जन्म लेगा। वस्तुतः कांग्रेस के नेताओं का यह डर झूठा तथा प्रपंच से युक्त था। वस्तुतः भारत के सैनिक अथवा नागरिक प्रशासन में कोई '*वैक्यूम*' नहीं उत्पन्न होने वाला था क्योंकि अंग्रेज़ किसी भी स्थिति में भारत एवं भारतवासियों को स्वतंत्रता देने के पक्ष में तब तक नहीं थे, जब तक कि उन्हें ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं किया जाता। कांग्रेस के नेताओं का मानना था कि भारत में ब्रिटिश '*वैक्यूम*' उत्पन्न होने से पूर्व, भारत को एक सैन्य शक्ति बनना चाहिए।

भारत से अंग्रेज़ों के प्रयाण जैसी 'भयानक' संभावना पर, कांग्रेस के नेताओं ने भारत के जन-मानस की भावना का अपमान करते हुए मुहर लगाई थी। कांग्रेस के नेताओं के इस कुकृत्य का वास्तविक कारण ऐसी स्थिति से उत्पन्न होने वाली किसी भी वास्तविक भयावहता में नहीं निहित था, वरन् इस तथ्य में निहित था कि कांग्रेस के नेताओं के पास भारत एवं भारतवासियों का नेतृत्व करने के लिए अपेक्षित कुशलता-सक्षमता का पूर्ण अभाव था। कांग्रेस के नेता, भारत एवं भारतवासियों के स्वतन्त्र होने की स्थिति से डरते थे क्योंकि वे सत्य से सर्वथा परिचित थे कि वे भारत एवं भारतवासियों का कुशल नेतृत्व करने के योग्य नहीं हैं। कांग्रेस के नेता केवल बातूनी थे वह नेतृत्व करने से सम्बंधित समस्याओं के विषय में कुछ भी नहीं जानते थे। कांग्रेस के नेता केवल पवित्र संकल्पों के रूप में निबंध-लेखन को कलमबद्ध करने में अच्छे थे और किसी भी संगठित, सतत और उद्देश्यपूर्ण कार्रवाई को क्रियान्वित करने में अत्यधिक अकुशल-असमर्थ थे।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इस तरह का राजनीतिक गठबंधन और 'अंतरराष्ट्रीय वफ़ादारी' (पाँचवीं स्तंभकार वफ़ादारी) से युक्त, कांग्रेस के नेताओं ने अपने प्रसिद्ध अगस्त प्रस्ताव में, ''ब्रिटेन के विरुद्ध भारत एवं भारतवासियों के मन में बढ़ रही दुर्भावना को रोकने के लिए'' और भारत एवं भारतवासियों को द्विवतीय विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्रों के साथ अधिक से अधिक सहयोग करने के लिए प्रेरित करने का तथा ''सभी अधीन और उत्पीड़ित मानवों को 'संयुक्त राष्ट्र' के पक्ष में लाकर 'संयुक्त राष्ट्र' को विश्व का नैतिक और आध्यात्मिक नेतृत्व प्रदान करने का संकल्प क्यों लिया था।

क्या यही वह ध्येय था जिसके लिए कांग्रेस के नेता लड़ रहे थे, या, स्पष्ट शब्दों में कहें तो क्या इसी ध्येय को प्राप्त करने के लिए कांग्रेस के नेता, भारत एवं भारतवासियों से कटिबद्ध होकर हर कष्ट सहते हुए सामूहिक त्याग करने का आग्रह कर रहे थे।

7

कांग्रेस के नेता किन साधनों और तरीकों से भारत एवं भारतवासियों को ध्येय प्राप्त करने का सब्ज़-बाग़ दिखा रहे थे? अहिंसा की विधि से! गोविंद बल्लभ पंत ने कहा, ''जहाँ तक अहिंसा का प्रश्न है, इसमें कोई मतभेद नहीं है। पर इसकी प्रभावशीलता के विषय में दो राय हो सकती है।'' हमें अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करने के लिए कहा जाता है, भले ही उसकी प्रभावशीलता अत्यधिक संदिग्ध हो।

वस्तुत: कांग्रेस के नेताओं के लिए किसी पद्धति तथा उसकी उच्च्च अमूर्तता के वैशिष्ट्य सिद्धांत के विषय में उसकी प्रभावशीलता एक राय

का विषय थी। कांग्रेस के नेताओं ने किसी पद्धति की प्रभावशीलता को तकनीक, प्रशिक्षण, संगठन तथा तैयारी के आधार से सम्बंधित करने को लेकर सदैव परहेज़ किया था।

मैं अहिंसा के सिद्धांत के विवाद से स्वयं को पृथक रखना चाहूँगा। वस्तुतः अहिंसा का सिद्धांत पूरी तरह से सिद्धांतवादी प्रकृति का है। मैं केवल इतना ही कहूँगाः कि कांग्रेस के नेताओं में किसी भी 'मौलिक तर्कसंगतता'—अर्थात, किसी घटना या स्थिति के अंतर-संबंधों में विज्ञ-बुद्धिमान वस्तुनिष्ठ अंतर्दृष्टि से युक्त विश्लेषण करने की क्षमता—का बहुधा अभाव था। इसके साथ ही कांग्रेस के नेताओं में किसी भी 'कार्यात्मक तर्कसंगतता'—अर्थात, पहले से परिभाषित लक्ष्यों को 'कुशलता तथा प्रभावी तरीके' से प्राप्त करने के लिए 'समन्वय और आयोजन के साधनों' की शक्तियों के उपयोग करने की क्षमताओं—का भी बहुधा अभाव था। कांग्रेस के नेताओं की यह असमर्थता एवं मूढ़ता भारत एवं भारतवासियों के लिए निराशाजनक एवं विषाद का विषय था। कांग्रेस के नेता न केवल अपने लक्ष्यों और निष्ठाओं में भ्रमित और विभाजित थे, वरन् वे अपने तरीकों में भी भ्रमित और अकुशल तथा अक्षम थे।

8

भारत एवं आम भारतवासियों ने स्वतंत्रता की क्रांति के साथ कभी भी परिहास-ठिठोली नहीं की। परन्तु कांग्रेस के नेताओं ने यह कुकृत्य किया है। कांग्रेस के नेताओं ने भारत एवं भारतवासियों की स्वतंत्रता की क्रांति के साथ वस्तुतः परिहास-ठिठोली ही की है। कांग्रेस के नेताओं की दृष्टि

में भारत एवं भारतवासियों की स्वतंत्रता का समय तथा भारत एवं भारतवासियों की स्वतंत्रता की प्राप्ति हेतु मार्ग का चयन करने का सर्वाधिकार केवल उनका ही है। वस्तुतः कांग्रेस के नेताओं ने भारत एवं भारतवासियों के भाग्य-विधाता के रूप में स्वयं को बलात् प्रतिष्ठापित किया। दुर्भाग्य से कांग्रेस के नेता सामाजिक-राजनीतिक गतिशीलता और क्रांति की आवश्यकताओं से अनभिज्ञ थे। कांग्रेस के नेता, लेनिन की दूरदर्शिता से युक्त कथन का संज्ञान लेने से चूक गए थे जिसमें लेनिन ने स्पष्ट शब्दों में कहा था, ''विद्रोह वस्तुतः युद्ध के समान ही एक कला है—और यह कुछ नियमों और प्रक्रियाओं के अधीन होती है।'' कांग्रेस के नेता या तो विस्मरण के पक्षाघात का शिकार हुए थे, या, वे मंदबुद्धि थे, वे अन्य सफल विद्रोहों से सीखने से परहेज़ रखते थे, या, वे वस्तुतः भारत के शत्रु तथा साम्राज्यवादी अंग्रज़ों के प्रति घोर निष्ठावान थे।

''एक नव-क्रांति, नव-संकट के परिणामस्वरूप ही संभव है।'' द्वितीय विश्व युद्ध का संकट वस्तुतः भारत एवं भारतवासियों के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु क्रांति का बिगुल था। परन्तु कांग्रेस के नेताओं ने उस उपयुक्त संकट का लाभ उठाने के स्थान पर चीख-चीख कर रोना और छाती पीटना प्रांरभ कर दिया। कांग्रेस के नेता ''अंग्रेज़ों की विपदा की स्थिति का उपयोग करके भारत एवं भारतवासियों के लिए स्वतंत्रता के लाभ को सुनिश्चित करने के उपक्रमों में संलग्न होने'' से डरते थे। कांग्रेस के नेता ''ब्रिटिश सरकार को शर्मिंदा करने'' से डरते थे। द्वितीय विश्व युद्ध में नित्य नए संकटों से जूझ रही ब्रिटिश सरकार की शक्ति दिन-प्रतिदिन क्षीण हो रही थी, यह भारत एवं भारतवासियों के लिए स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने के एक बड़ा सुअवसर था। परन्तु कांग्रेस के

नेता कुछ भी करने से, या, कोई भी तैयारी करने से, या, कोई भी कार्रवाई करने की बजाए भारत एवं भारतवासियों को इधर-उधर की प्रपंचपूर्ण अतर्कसंगत बातें बता कर भामित करने में व्यस्त रहे। कांग्रेस के नेताओं ने भारत एवं भारतवासियों को पुन: भ्रमित करने के उद्देश्य से इस सुअवसर का तब लाभ लेने का नाटक रचा जब द्वितीय विश्व युद्ध की परिस्थितियाँ अपरिहार्य रूप से अंग्रेज़ों के पक्ष में हो गई थीं। अत: यह स्पष्ट है कि कांग्रेस के नेताओं ने जानबूझकर भारत एवं भारतवासियों को स्वतन्त्र कराने के लिए प्रयास तब प्रारंभ किए जब सुअवसर की स्थिति क्षीण-समाप्त हो चुकी थी। ब्रिटेन द्वितीय विश्व युद्ध के संकट से उबर चुका था।

भारतीयों द्वारा द्वितीय विश्व युद्ध के संकट ज्वार का लाभ न उठाने का मूल कारण यह था कि कांग्रेस के नेताओं ने भारत एवं भारतवासियों के साथ छल-विश्वासघात कर के परोक्ष रूप से ब्रिटिश सरकार का साथ दिया था। जब ब्रिटिश सरकार द्वितीय विश्व युद्ध में नित्य नए संकटों से जूझ रही थी तब कांग्रेस के नेता भारत एवं भारतवासियों को समझा रहे थे कि वे भारत एवं भारतवासियों को अहिंसा के मार्ग से ही स्वतंत्रता दिलवाने के लिए कटिबद्ध हैं परन्तु जब ब्रिटिश सरकार द्वितीय विश्व युद्ध के संकटों से उबर गई थी तब कांग्रेस के नेताओं ने भारत एवं भारतवासियों की दृष्टि में अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए प्रपंच के तहत 1942 सीई के आन्दोलन को मूर्त रूप प्रदान किया था। कांग्रेस के नेताओं को ''अपनी स्वयं की अहिंसक शक्ति'' से युक्त आन्दोलनों से पृथक होकर भारत एवं भारतवासियों के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति का प्रयास करने के विचार से भी घृणा थी, अतएव

उन्होंने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के प्रयासों अर्थात् आज़ाद हिंद फ़ौज (आईएनए) से स्वयं को सर्वथा पृथक रखा।

यद्यपि देर से ही सही, जब द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान कांग्रेस के नेताओं ने भारत एवं भारतवासियों को स्वतन्त्र कराने के लिए 1942 सीई[1] का आन्दोलन प्रारंभ किया, वे वस्तुतः इस आन्दोलन के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे। कांग्रेस के नेताओं ने इसके लिए कभी भी कोई सुनियोजित तैयारी नहीं की थी क्योंकि क्रांति के उनके विचार अत्यधिक '*रोमांटिक*' थे। कांग्रेस के नेताओं के क्रांति से सम्बंधित विचार फ्रांसीसी क्रांति के उदाहरण पर आधारित थे, जिसमें एक नगर में एक भीड़ एकत्रित होकर पूरे राज्य को अपने अधिकार में ले लेती है। कांग्रेस के नेता जन-मानस की रहस्यमय इच्छा या स्व-समायोजन, स्व-सुधार करने वाली सामाजिक शक्तियों में बहुत अधिक विश्वास करते थे। कांग्रेस के नेताओं का मानना था कि जन-मानस को उनके सामूहिक लक्ष्यों के हित में तथा किसी भी हद तक जाकर कार्य करने के लिए उद्यत-उत्तेजित किया जा सकता है।

आज, यह एक स्पष्ट तथ्य है—इतना स्पष्ट कि यह हर किसी की आँखों को चकाचौंध कर सकता है—कि हर लक्ष्य की सफलता एक उचित तकनीक, योजना और संगठन पर निर्भर करती है। हमें युद्ध के साथ-साथ शांति के लिए भी योजना बनानी होगी तथा उस योजना के कुशल क्रियान्वयन हेतु तैयारी भी करनी होगी। हक़ीक़त में, आज सामाजिक और राजनीतिक जीवन इतना जटिल हो गया है कि किसी भी

[1] अनुवादक की टिप्पणी—भारत छोड़ो आन्दोलन, द्वितीय विश्व युद्ध के समय 8 अगस्त 1942 को आरम्भ किया गया था। इस आन्दोलन का लक्ष्य, भारत पर ब्रिटिश आधिपत्य को समाप्त करना था। महात्मा गांधी ने अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के मुम्बई अधिवेशन में इस आंदोलन को प्रारंभ करने का आह्वान किया था। यह भारत को त्वरित स्वतन्त्र करने के लिए अंग्रज़ों के विरुद्ध एक सविनय अवज्ञा आन्दोलन था।

बड़े या छोटे लक्ष्य की सफलता उसकी उचित प्रत्याशा-पूर्वानुमान, गणना और तैयारी पर निर्भर करती है। यद्यपि कांग्रेस के नेताओं का मत, हास्यास्पद रूप से इसके सवर्था विपरीत था, वे बिना उचित प्रत्याशा-पूर्वानुमान, गणना और तैयारी के भी कार्यों-योजनाओं के सफल क्रियान्वयन करने में स्वयं को समर्थ-सक्षम मानते थे। कांग्रेस के नेताओं को 'सुनियोजित अथवा योजनाबद्ध क्रांति' के विषय में विधिवत ज्ञान नहीं था। कांग्रेस के नेता भूल गए थे कि क्रांति, वस्तुतः एक बड़े पैमाने पर, एक '*इंजीनियरिंग*' के प्रश्न के सदृश्य है।

किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक उचित-व्यावहारिक संगठन आवश्यक है क्योंकि एक संगठन क्रियाशील होता है। एक उचित-व्यावहारिक संगठन ही ऊर्जा को संग्रहित और व्यवस्थित करता है। एक उचित-व्यावहारिक संगठन ही गतिविधियों का सुचारु रूप से समन्वय करता है। एक उचित-व्यावहारिक संगठन ही अनावश्यक घर्षण, बर्बादी, जाम, झड़प, घबराहट और संकट से बचाता है और निरंतरता सुनिश्चित करता है। एक उचित-व्यावहारिक संगठन ही न्यूनतम प्रयास में अधिकतम प्रभाव को सुनिश्चित करता है। यद्यपि कांग्रेस ने हर किसी को नेता बनने तथा एक 'असंगठित गतिविधि' में संलग्न होने के लिए उद्यत-उत्तेजित किया था। वस्तुतः अंग्रज़ों के हितों की रक्षार्थ हेतु कांग्रेस ने संभवतः जानबूझकर भारत एवं भारतवासियों को इस प्रकार से 1942 सीई की कांति के लिए नियोजित किया था कि ''भारत एवं भारतवासी अंग्रेज़ों का कम से कम सम्भव प्रतिरोध करने में तथा सर्वाधिक वृहद्-विपुल संभावित भूल'' करने के लिए उद्यत हों।

कांग्रेस के नेताओं ने संगठन के विषय में भी त्रुटि की थी। कांग्रेस के नेताओं ने प्रशिक्षण के विषय में और भी अधिक आपराधिक कृत्य किया

था। किसी भी जन-क्रान्ति की गतिविधि को सुचारू रूप से प्रभावी बनाने के लिए, जन-मानस को तकनीकी रूप से शिक्षित-दीक्षित-प्रशिक्षित तथा सूचित किया जाना चाहिए। कांग्रेस के द्वारा हर किसी को नेता बनने तथा एक 'असंगठित गतिविधि' में संलग्न होने के लिए उद्यत-उत्तेजित करना ही पर्याप्त नहीं था। उस 'असंगठित गतिविधि' के कार्य को निष्पादित करने के लिए भारत के आम जनमानस को प्रशिक्षित करना भी उतना ही आवश्यक था। ऐसा करने के लिए क्षमता, प्रासंगिक जानकारी और उचित प्रशिक्षण की महती आवश्यकता होती है। यद्यपि इन आवश्यकताओं-अर्हताओं के अभाव में, 'करो या मरो' का उद्घोष आमतौर पर भारत के आम जनमानस को कुछ भी यथार्थपूर्ण करने के लिए प्रेरित न करके उसे मृत्यु का आलिंगन करने के लिए उद्यत-उत्तेजित एवं कटिबद्ध करने के समान था। अत: कांग्रेस के नेताओं ने भारत एवं भारतवासियों को उचित प्रशिक्षण दिए बिना, 'करो या मरो' का नारा दिया था। इस दृष्टि से यह स्पष्ट होता है कि कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व भारत एवं भारतवासियों की स्वतंत्रता के लिए प्राणोत्सर्ग हेतु कटिबद्ध नहीं था वरन् वे अपनी सत्ता लोलुपता एवं स्वार्थ से वशीभूत होकर भारत के आम जनमानस की बलि देने वाले कसाई थे। मृत्यु—भले ही वह शहादत-प्राणोत्सर्ग हो—एक कुरूप आयाम है, हालाँकि दुर्भाग्य से, कांग्रेस के नेताओं के सामूहिक-लालच तथा कांग्रेस के नेताओं के भारत एवं भारतवासियों पर सामूहिक-वर्चस्व को सुनिश्चित कराने के लिए, कांग्रेस के शीर्ष नेताओं ने आम जनमानस की बलि देने को आवश्यक माना है। यद्यपि इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कांग्रेस के "मान्यता प्राप्त नेतृत्व" (जैसा कि आज़ाद स्वयं तथा कांग्रेस के अपने अन्य सहयोगियों का वर्णन करते हैं) का कर्तव्य है कि वे भारत के आम जनमानस की कम से कम

बलि देने की संभावनाओं पर विचार करें। यद्‌यपि संभवतः यह स्पष्ट ही है कि कांग्रेस के ''मान्यता प्राप्त नेतृत्व'' ने भारत एवं भारतवासियों पर सामूहिक-वर्चस्व को सुनिश्चित कराने के लिए, कभी भी भारत के आम जनमानस की कम से कम बलि देने की संभावनाओं पर विधिवत नहीं सोचा था। वस्तुतः कांग्रेस के नेता ऐसे विक्षिप्त स्वार्थी मनुज थे, जो अपने निजी स्वार्थ की पूर्ति के लिए दूसरों की मृत्यु-शहादत-प्राणोत्सर्ग का जश्न मनाते थे। वस्तुतः कांग्रेस के नेता मानसिक रूप से अत्यंत अस्वस्थ-विक्षिप्त, मंदबुद्धि, राष्ट्रद्रोही एवं अप्राकृतिक प्रवृत्ति के नृशंस अमानवीय अधम मनुष्यों के उप-समूहों के अंगभूत हैं।

कांग्रेस के नेताओं ने बड़ी-बड़ी बातें कीं और बड़े-बड़े वादे किए। कांग्रेस के नेताओं ने भारत एवं भारतवासियों को दुसाध्य स्वप्निल आशाओं के कुटिल मोहपाश में बाँधे रखा। कांग्रेस के नेताओं ने बड़ी चालाकी और कुटिलता से मधुर वाक्याशों का प्रयोग किया। कांग्रेस के नेताओं द्‌वारा प्रयुक्त 'करो या मरो', या 'अहिंसा धर्म का पालन करते हुए राष्ट्र के लिए मृत्यु से आलिंगन करो' बहुत अच्छे वाक्यांश थे तथा वे उपयोगी और आवश्यक वाक्यांश-उद्‌घोष भी सिद्ध हुए। कांग्रेस के नेताओं ने इन उद्‌घोषों-वाक्यांशों का उपयोग करके भारत एवं भारतवासियों द्‌वारा अच्छी तरह से समझी जाने वाली परिस्थितयों में एक उचित वातावरण का निर्माण करने का प्रयास करते हुए भारत के आम जनमानस को उत्साहित एवं उत्तेजित किया। वस्तुतः कांग्रेस के नेताओं ने इन वाक्यांशों का उपयोग करके भारत के आम जनमानस के लहू से अपने क्षुद्र स्वार्थ को सिंचित किया। कांग्रेस के नेताओं ने जानबूझकर भारत के आम जनमानस का उपयोग अपने सत्ता-लोलुपता के व्यक्तिगत स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए किया। कांग्रेस के नेताओं ने जानबूझकर भारत के

आम जनमानस को किसी भी प्रकार का सहयोग–समर्थन नहीं दिया था। भारत के आम जनमानस के मनोबल को गिराने में इसी कारण ने सर्वाधिक योगदान दिया था। वस्तुतः कांग्रेस के कई नेताओं ने भारत के आम जनमानस से वादा किया था कि 'अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आंदोलन' इतना तीव्र होगा और विजय एवं स्वतंत्रता, केवल एक सप्ताह में आसानी से प्राप्त हो जाएगी। कांग्रेस के नेताओं ने भारत के आम जनमानस को यह समुचित तरीके से बताने से परहेज़ किया कि उन्हें उस यादगार सप्ताह में स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए वस्तुतः क्या और कैसे कार्य करना होगा। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि बाइबल में वर्णित '*गॉड*' द्वारा सात दिनों में ब्रह्माण्ड की रचना के '*फैशन*' का अनुसरण करते हुए कांग्रेस के नेताओं ने भारत एवं भारतवासियों के समक्ष एक कपोल–कल्पित स्वप्न प्रस्तुत किया था। कांग्रेस के नेताओं के इस तरह के ग़ैर–ज़िम्मेदाराना उद्वेगों का यदि सर्वाधिक उदारतापूर्वक दृष्टि से भी आकलन करें तो भी यह एक भ्रामक एवं स्वार्थ से अभिभूत अधि–दुष्प्रचार ही था। '*प्रोपोगंडा*' यानी अधिप्रचार वस्तुतः घटनाओं का पूर्वानुमान लगाने और जो घटित होने वाला है उसके लिए लोगों को पहले से तैयार करने की सामरिक–रणनीतिक कला है। यदि ऐसा नहीं किया जाता है, और जनमानस के मन–मस्तिष्क में सँजोए गए स्वप्न के सापेक्ष में परिणाम अन्यथा अथवा उलट आते हैं तो जनमानस के मन–मस्तिष्क को इससे गहरा दुःखद आघात प्राप्त होता है तथा इसके परिणामस्वरूप दीर्घकाल के लिए जनमानस के अंगभूत सामूहिक रूप से हतोत्साहित एवं उर्जाहीन हो जाते हैं।

कांग्रेस के नेताओं ने अपने क्षुद्र स्वार्थ की पूर्ति हेतु केवल भ्रम की स्थिति का निर्माण करने का प्रयास किया था। कांग्रेस के नेताओं को संभवतः यह गलतफ़हमी थी कि उनके सोचने एवं भ्रामक शब्दों का

उपयोग कर के स्वप्निल परिदृश्य प्रस्तुत करने से ही, भारत के शत्रु तथा साम्राज्यवादी अंग्रेज भयभीत होकर भारत एवं भारतवासियों को स्वतन्त्र घोषित कर देंगे।

9

कांग्रेस के नेताओं ने अगस्त 1942 से पूर्व भारत एवं भारतवासियों को हर प्रकार से भ्रमित कर उलझा दिया था। कांग्रेस के नेताओं ने अगस्त 1942 में भी भारत एवं भारतवासियों को अपने क्षुद्र स्वार्थ की पूर्ति हेतु पुनः भ्रमित करने का ही प्रयास किया था। जैसे ही भारत का आम जनमानस कांग्रेस के नेताओं द्वारा रचे गए भ्रमजाल एवं इंद्रजाल के पाश से मुक्त होने लगता था, कांग्रेस के नेता पुनः भारत एवं भारतवासियों को भ्रमित करने के लिए अपने वही पुराने पैंतरों का उपयोग करने लगते थे। कांग्रेस के नेता प्रपंच रचकर भारत एवं भारतवासियों को इस भ्रम में डालने का प्रयास करते थे कि उन्हें भारत एवं भारतवासियों के लिए स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने से सम्बंधित सभी प्रकार का ज्ञान-बोध है और वे सभी इस कार्य को अंजाम तक पहुँचाने के लिए कटिबद्ध हैं।

कांग्रेस के नेता जब जेल से बाहर आए तब उन्हें भारत एवं भारतवासियों के शत्रु तथा साम्राज्यवादी अंग्रेज़ों से सार्वजनिक रूप से माफ़ी माँगनी पड़ी। पर कांग्रेस के नेताओं ने '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' के लिए ज़िम्मेदारी लेने से इंकार कर दिया था और यह सही भी था। यह सर्वथा सत्य ही है कि कांग्रेस के नेता, न तो कर्मों में, न शब्दों में, न ही इरादों-प्रयोजनों में, '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' के अंग थे; सिवाय इसके कि ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस के नेताओं को भारत एवं भारतवासियों को

उत्तेजित करते हुए रंगे-हाथ पकड़ा था और वस्तुत: कांग्रेस के नेता अपने क्षुद्र स्वार्थ की पूर्ति हेतु इसमें सवर्था सम्मिलित थे। अत: सम्मानित, मध्यम वर्ग, गांधी-टोपी पहनने वाले, कांग्रेस के देश भर में आधिकारिक रूप से जिम्मेदार सचिवों और अध्यक्षों की पूरी शृंखला को पकड़ने का कोई औचित्य नहीं था। '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' में जो कुछ भी किया गया, वह छात्रों, श्रमिकों (मजदूरों) और कृषकों (किसानों) ने अपनी पहल पर किया था, अपने जोखिम पर किया था तथा कांग्रेस की ओर से बिना किसी सहयोग-समर्थन या प्रोत्साहन के किया था। परन्तु जब कांग्रेस के उच्च पदाधिकारी जेल से बाहर आए, तब उनका एकमात्र उद्देश्य '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' में सम्मिलित हुए राष्ट्रवादी भारतीयों का अपमान करना था, उनके योगदान को कमतर करके बताना या गौण प्रमाणित करने का प्रयास करना था तथा भारत एवं भारतवासियों को उन राष्ट्रवादी भारतीयों से प्रेरणा लेने से रोकना था। कांग्रेस के नेता तथा उनकी '*प्रेस*' ने सदैव उन राष्ट्रवादी भारतीयों को एक 'भीड़' में निरूपित कर के, उनके नेतृत्वकर्ताओं के समग्र प्रयासों को गौण और भारत एवं भारतवासियों की नज़रों से ओझल करने का प्रयास किया है। दूसरी ओर, कांग्रेस के नेताओं में से एक ने, नैतिकता का हवाला देते हुए, आगे बढ़कर '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' की ''पूरी ज़िम्मेदारी ले ली''। इस प्रकार छल से उसने '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' पर अपना पूर्ण स्वामित्व स्थापित किया और उसका समस्त श्रेय ले लिया, जिसमें वस्तुत: उसकी कोई सक्रिय या सार्थक हिस्सेदारी नहीं थी।

'1942 सीई की क्रांति' के दौरान भारत एवं भारतवासियों ने जो कुछ भी थोड़ा-बहुत किया, उसके राजनीतिक महत्तव को कांग्रेस के नेताओं ने पूरी तरह से गौण घोषित करने का प्रयत्न किया। कांग्रेस के नेताओं ने '1942 सीई की क्रांति' को अगस्त की ''अशांति'' (महज अशांति?) के रूप में निरूपित करने का प्रयास किया। उस समय के तत्कालीन कांग्रेस के नेता इस '1942 सीई की क्रांति' में सम्मिलित ही नहीं हुए थे, अत: उन्होंने '1942 सीई की क्रांति' की व्याख्या अगस्त की ''अशांति'' के रूप में की, जो उनके लिए अत्यधिक अनुकूल थी। कांग्रेस के नेताओं ने अपने वरिष्ठ नेताओं की चापलूसी करते हुए प्रपंच गढ़ा कि आम भारतीय (जनमानस) ''अपने प्रिय (कांग्रेस के) नेताओं की अकारण गिरफ़्तारी पर क्षुब्ध एवं उत्तेजित होकर स्वत: ही सामूहिक रूप से उपद्रव करने में संलग्न एवं उद्यत हुए थे।'' कांग्रेस के नेता, अपने स्वयं के अनुमान में भारत एवं भारतवासियों के नेता हो सकते हैं और संभवत: भारतीय जनमानस की भावना के विषय में भी, परन्तु कांग्रेस के नेताओं ने यह प्रमाणित करने के लिए कुछ भी नहीं किया था कि वे भारत एवं भारतवासियों का नेतृत्व करने के लायक हैं तथा दूसरी ओर, कांग्रेस के नेताओं ने भारत एवं भारतवासियों का नेतृत्व करने के अपने विशेषाधिकार से च्युत होने के लिए, वह सब कुछ किया था, जो नैतिकता की दृष्टि से सवर्था अक्षम्य था।

यह भारत एवं भारतवासियों के लिए नितांत दुर्भाग्य का विषय है कि कांग्रेस के नेताओं ने भारत एवं भारतवासियों को सामूहिक रूप से छलने के पश्चात् स्वयं को अपनी अंतरात्मा के प्रति सच्चे होने के प्रमाणपत्र देना प्रारंभ कर दिया। कांग्रेस के नेताओं ने पुन: प्रपंच रचकर, स्वयं को अथवा

अन्य कांग्रेस के साथी नेताओं को भारत एवं भारतवासियों के नेतृत्व करने की ज़िम्मेदारियाँ देना प्रारंभ कर दिया। कांग्रेस के नेताओं ने छल-प्रपंच रचकर '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' का दोष राष्ट्रवादियों एवं ''भीड़'' पर मढ़ दिया। कांग्रेस के नेता प्रपंच रचकर, स्वयं की अथवा अन्य कांग्रेस के साथी नेताओं द्वारा ब्रिटिश कारागारों में तथाकथित सहे गए कष्टों-बलिदानों की कपोल-कल्पित कथाओं को भारत के जनमानस के मध्य अधि-प्रचारित एवं प्रसारित करने में युद्ध स्तर पर संलग्न हो गए। ब्रिटिश कारागारों में तथाकथित सहे गए कष्टों-बलिदानों की कपोल-कल्पित कथाओं को सत्य के रंग से अभिभूत करने के लिए कांग्रेस के नेता अपने साथी कांग्रेस के नेताओं के साथ गुलदस्तों का आदान-प्रदान करने में व्यस्त हो गए। अत: इस प्रकार, कांग्रेस के नेताओं ने छल-प्रपंच रचकर '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' के सम्पूर्ण श्रेय पर अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया। कांग्रेस के नेताओं को '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' की विफलता के कारणों की जाँच के लिए एक आयोग का गठन करना चाहिए था। वह उनका पहला काम होना चाहिए था। यद्यपि, ऐसा करने के बजाए, कांग्रेस के नेता अंधे बने रहने का नाटक कर रहे थे और इस तथ्य पर ध्यान नहीं दे रहे थे कि भारत एवं भारतवासी सामूहिक रूप से '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' में असफल हुए थे। एक तरफ कांग्रेस के नेता यह कहते हुए नहीं अघाते थे कि उन्होंने '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' को प्रारंभ नहीं किया था, पर दूसरी तरफ वे यह कहने से भी नहीं हिचकिचाते थे कि यदि वे एक बार यह मान भी जाते हैं कि उन्होंने ही '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' को प्रारंभ किया था, तो भी

अंग्रेज़ उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाए और उन्होंने वस्तुतः कुछ भी नहीं खोया। कांग्रेस के नेताओं ने यह बारम्बार घोषित किया है कि उन्होंने '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' के माध्यम से अंग्रेज़ों पर विजय प्राप्त की थी, यह कांग्रेस के नेताओं की कैसी हास्यास्पद आत्मश्लाघा-आत्मप्रशंसा से सराबोर-तरबतर आत्मसंतुष्टि है!!!

10

मैं कांग्रेसी नेताओं को दोषी ठहराता हूँ क्योंकि उन्होंने स्वयं को किसी भी अंतर्दृष्टि के अनुसार अकुशल-असक्षम-असमर्थ प्रमाणित किया है। वे अंग्रेज़ों के साथ अपने परस्पर मधुर अंतर्संबंधों से वशीभूत होकर भारत के हितों से सम्बंधित विषयों और स्थितियों का न तो आकलन करते थे और न उनका विधिवत संज्ञान लेते थे। इसके स्थान पर, वे कुछ नैतिक सिद्धांतों का उद्घोष कर जनमानस को बरगलाने में, राजनीतिक उद्घोषों के मकड़जालों का सृजन करने में तथा अंग्रेज़ों से सम्मान के व्यक्तिगत अंकों को प्राप्त करने में संलग्न रहते थे।

मैं कांग्रेसी नेताओं को दोषी ठहराता हूँ क्योंकि उन्होंने किसी भी दूरदर्शिता की कसौटी में स्वयं को अयोग्य-असमर्थ प्रमाणित किया है। कांग्रेसी नेता भारत के जनमानस को भावी संघर्ष के लिए तैयार करने में, भारत के स्वतंत्रता संग्राम के लिए विस्तृत-व्यावहारिक योजना बनाने में तथा भारत के जनमानस को संगठित एवं प्रशिक्षित करने में सवर्था विफल रहे। दूसरी ओर वे भारत एवं भारतवासियों के समक्ष अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए छल-प्रपंच से युक्त भाषणों के निर्माण और निबंधों के लेखन तथा संदिग्ध एवं कपोल-कल्पित राजनीतिक

प्रभावशीलता और क्रांतिकारियों की उपलब्धियों के विरुद्ध भावनात्मक अपशब्दों (जैसे 'अंतिम छलांग') पर निर्भर रहे।

मैं कांग्रेसी नेताओं को दोषी ठहराता हूँ क्योंकि उन्होंने स्वयं को किसी भी पूर्व-निरीक्षण में असमर्थ-अकुशल-असक्षम प्रमाणित किया था। कांग्रेस के नेता '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' की विफलता के कारणों की जाँच करने और उससे कोई सबक लेने में सवर्था विफल रहे। इसके बजाय, कांग्रेस के नेताओं का यह मानना था कि '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' को उपद्रव या अशांति के रूप में, 'स्वीकार करने या अस्वीकार करने से' तथा '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' के सन्दर्भ में आम भारतीय जनमानस को 'दोष देने या उनकी प्रशंसा करने से' '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' की विफलता के कारणों की 'बुद्धिमान और ईमानदार सराहना' को प्रतिस्थापित किया जा सकता है। अत: कांग्रेस के नेताओं की दृष्टि में '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' की विफलता के कारणों की जाँच करने का कोई औचित्य नहीं था तथा उनकी दृष्टि में '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' की विफलता से कोई शिक्षा अथवा सबक लेना भी आवश्यक नहीं था। अत: कांग्रेस के नेता '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' की विफलता से कोई शिक्षा सबक लेने में सवर्था विफल रहे क्योंकि '1942 सीई की क्रांति (अंग्रेज़ों, भारत छोड़ो आन्दोलन)' में बिना सम्मिलित हुए वस्तुत: उन्होंने बिना कुछ भी खोए '1942 सीई की क्रांति' के माध्यम से सब कुछ (सत्ता सुख, श्रेय-सम्मान) पाया ही था। यह सत्य ही है कि '1942 सीई की क्रांति' में

कांग्रेस के नेताओं के छल-प्रपंच के कारण आम भारतीय जनमानस ने बहुत कष्ट सहे थे तथा आम भारतीय जनमानस ने ही बहुत कुछ खोया था। '1942 सीई की क्रांति' में आम भारतीय जनमानस विफल नहीं हुआ था वस्तुतः वे कांग्रेस के नेता ही थे जो भारत एवं भारतवासियों का समुचित एवं नैतिक नेतृत्व करने में विफल हुए थे।

मैं कांग्रेसी नेताओं को दोषी ठहराता हूँ क्योंकि कांग्रेस के नेताओं ने सदैव राष्ट्रवादी भारतीयों एवं भारत माँ के सच्चे सपूतों (सुभाष चन्द्र बोस और जय प्रकाश नारायण जैसे लोगों) के विरुद्ध अपमानजनक एवं निम्न स्तर के अपशब्दों का सतत प्रयोग किया है। कांग्रेस के नेताओं ने सदैव उन राष्ट्रवादी भारतीयों को अपमानित किया है, जिनके पास राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने की कोई व्यावहारिक-तर्कसंगत अवधारणा थी। कांग्रेस के नेताओं ने सदैव उन राष्ट्रवादी भारतीयों को अपमानित किया है, जो भारत एवं भारतवासियों को उनके शत्रु तथा साम्राज्यवादी अंग्रेज़ों की परतंत्रता से स्वाधीन कराने की समस्या की भयावहता या रणनीति की व्यापकता से परिचित थे। कांग्रेस के नेताओं ने सदैव उन राष्ट्रवादी भारतीयों को अपमानित किया है, जो भारत एवं भारतवासियों को उनके शत्रु तथा साम्राज्यवादी अंग्रेज़ों की परतंत्रता से स्वाधीन कराने के लिए तीव्र-उत्कट संघर्ष करने के पक्ष में थे। कांग्रेस के नेताओं ने सदैव उन राष्ट्रवादी भारतीयों को अपमानित किया है, जो भारत एवं भारतवासियों को उनके शत्रु तथा साम्राज्यवादी अंग्रेज़ों की परतंत्रता से स्वाधीन कराने से सम्बंधित राष्ट्रीय तात्कालिकता को प्राथमिकता देते थे। कांग्रेस के नेताओं ने सदैव उन राष्ट्रवादी भारतीयों को अपमानित किया है, जो भारत एवं भारतवासियों को उनके शत्रु तथा साम्राज्यवादी अंग्रेज़ों की परतंत्रता से स्वाधीन कराने के लिए अत्यधिक प्रेरित एवं अधीर थे।

कांग्रेस के नेता किसी राष्ट्र का ज़िम्मेदारी के साथ नेतृत्व करने में सर्वथा अकुशल–असक्षम–असमर्थ हैं। कांग्रेस के नेता न तो इतिहास को वस्तुनिष्ठ–तर्कसंगत तरीके से पढ़ सकते हैं और न ही इतिहास से कोई लाभ प्राप्त करने के इच्छुक–अभिलाषी हैं। कांग्रेस के नेता वस्तुतः भारत की एकता–अखंडता तथा समावेशी–सहिष्णु सुसंस्कृति के पक्षपोषकों एवं पक्षसमर्थकों की संतुतियों को अनसुना करने में तथा अन्य भारतीयों को उनका अनुसरण अथवा सम्मान करने से रोकने में विश्वास रखते हैं। कांग्रेस के नेता वस्तुतः भारत की एकता–अखंडता तथा समावेशी–सहिष्णु सुसंस्कृति के पक्षपोषकों एवं पक्षसमर्थकों तथा भारत के आम जनमानस के मध्य संपर्कों को अवरुद्ध करने में तथा उनके विरुद्ध असत्यपूर्ण अधि–दुष्प्रचार करने में विश्वास रखते हैं। कांग्रेस के नेता वस्तुतः भारत की एकता–अखंडता तथा समावेशी–सहिष्णु सुसंस्कृति के पक्षपोषकों एवं पक्षसमर्थकों को तिरस्कृत करने में, छल–प्रपंच रच कर उनका अनादर कराने में या षड्यंत्र रच कर उनकी हत्या करवाने या उन्हें शांत करने में विश्वास रखते हैं। सारांशतः कांग्रेस के नेता वस्तुतः व्यक्तिगत–निजी स्वार्थ से अभिप्रेरित होकर भारत के शत्रु तथा साम्राज्यवादी अंग्रेज़ों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति–रीति का अक्षरशः अनुसरण करने में विश्वास रखते हैं, अतः वे किसी भी राष्ट्र को अल्प अथवा दीर्घकाल में, वास्तविक सुदृढ़ आकार देने में सर्वथा असक्षम–अकुशल–असमर्थ हैं।

11

मैं उन सभी से एक '*अपील*' के साथ अपनी बात समाप्त करना चाहूँगा जिनकी हमारी राष्ट्रीय राजनीति में प्रज्ञ–बुद्धिमत्तापूर्ण और आलोचनात्मक रुचि है। हमारे कांग्रेसी नेता ऐसा सोचते हैं और व्यवहार करते हैं, मानो हम

भारतवासियों पर नेतृत्व करने का उन्होंने विशेषाधिकार प्राप्त किया है। हमारे कांग्रेसी नेताओं के अनुसार नेतृत्व करने के विशेषाधिकार को कोई भी अर्जित कर सकता है, यदि उसके पास पर्याप्त धन हो, समय हो और यदि वह समय-समय पर मंच से जन-मानस दर्शकों का कुछ नैतिक तथा राजनीतिक नारों-उद्घोषों के माध्यम से मनोरंजन करने अथवा उन्हें उत्तेजित करने में सर्वथा समर्थ हो। हमें यह समझना होगा कि नेतृत्व में उत्तरदायित्व निहित है, नेतृत्व में अनुयायियों-अनुचरों तथा जनमानस के पालण-पोषण-सुरक्षा का भार निहित है, नेतृत्व में जनमानस का विश्वास निहित है और जो लोग, नेतृत्व के इस भार को अपने कंधों पर उठाते हैं, वे जनमानस के प्रति उत्तरदायी भी होते हैं। क्या यह भारत के क्रांतिकारियों की सोच को प्रतिबिंबित करता है, जिन्होंने वस्तुतः भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग किया था। कांग्रेस के शीर्ष नेताओं ने 1942 सीई के भारतव्यापी आंदोलन जैसे आपराधिक गड़बड़झाले और उसकी असफलता के पश्चात् अंग्रेज़ों के कारागारों में आरामदायक विलासिता से परिपूर्ण शरण लेने के पश्चात् फिर से अपने उसी पुराने अति आत्मसंतुष्टता के भाव तथा आत्मविश्वास के साथ भारत एवं भारतवासियों के साथ छल करना प्रारंभ कर दिया। कांग्रेस के नेताओं ने फिर से भारत एवं भारतवासियों को कांग्रेस के अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करने पर स्वतंत्रता प्राप्त होने की आशा एवं सब्ज़-बाग़ दिखाना प्रारंभ कर दिया। कांग्रेस के नेताओं ने पूर्ण आत्म-भ्रम और आत्म-सम्मोहन की उसी स्थिति में विचरते हुए भारत एवं भारतवासियों को पुनः अपने सम्मोहक भाषणों, प्रपंचों एवं तौर-तरीकों से छला। यह वस्तुतः यक्ष प्रश्न है कि भारत एवं भारतवासियों ने इस बार भी कांग्रेस के नेताओं को बिना चुनौती दिए या उनसे बिना पूछताछ किए, उन पर पुनः आँखें मूँदकर क्यों भरोसा किया ?

About the Translator

सौरभ अग्रवाल, धातुकीय अभियांत्रिकी, आईआईटी-बीएचयू से स्नातक हैं। वह नियमित स्वैच्छिक रक्तदाता, शोधकर्ता, शिक्षाविद्, लेखक-अनुवादक, कवि एवं राष्ट्रवादी सामाजिक कार्यकर्ता हैं। पूर्व में वह इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड के अधिकारी, नारायणा शिक्षण संस्थान, कानपुर के समूह निदेशक (अकादमिक) आदि पदों पर आसीन रहते हुए विभिन्न दायित्वों का निर्वहन कर चुके हैं। इसके पूर्व सौरभ अग्रवाल जी द्वारा अनुवादित आठ अन्य पुस्तकें ''**मुस्लिम हमलावरों के विरुद्ध शूर हिन्दू प्रतिरोध (636 ई. से 1206 ई. तक)**'', ''**हिन्दू और हिन्दू धर्मः शब्दों के अर्थ और छल**'', ''**मार्क्सवादी-स्तालिनवादी इतिहासकारों का झूठ का मकड़जाल**'', ''**राष्ट्रीय दृष्टि की पुनर्स्थापना**'', ''**मन्ना : एक स्वर्गीय भोजन (यथार्थ या भ्रम?)**'', ''**वे आज कहाँ हैं? (साम्यवाद के कम्युनिस्ट)**'', ''**शिक्षा के प्रति हिन्दू दृष्टिकोण**'' तथा ''**पश्चिम बंगाल में रक्तिम नक्षत्रोदय**'' वॉयस ऑफ इंडिया द्वारा प्रकाशित की जा चुकीं हैं। ''**एक अभियोग : कौन 1942 की विफलता का उत्तरदायी है?**'' वॉयस ऑफ इंडिया के लिए अनुवादक के रूप में सौरभ अग्रवाल जी की नौवीं प्रकाशित पुस्तक है।